FAIZANE SHA'BAN
(HINDI BAYAAN)

फ़ैज़ाने शा'बान

दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में
होने वाला सुन्नतों भरा हिन्दी बयान

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

نَوَيْتُ سُنَّتَ الاعْتِكَاف (**तर्जमा :** मैं ने सुन्नत ए'तिकाफ़ की निय्यत की)

जब भी मस्जिद में दाख़िल हों, याद आने पर नफ़्ली ए'तिकाफ़ की निय्यत फ़रमा लिया करें, जब तक मस्जिद में रहेंगे, नफ़्ली ए'तिकाफ़ का सवाब ह़ासिल होता रहेगा और ज़िमनन मस्जिद में खाना, पीना, सोना भी जाइज़ हो जाएगा।

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बख़्शिश निशान है : जिस ने दिन और रात में मेरी त़रफ़ शौक़ व मह़ब्बत की वजह से तीन तीन (3-3) मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ह़क़ है कि वोह उस के उस दिन और उस रात के गुनाह बख़्श दे।

(معجم کبیر، ج۱۸ص۳۶۲حدیث۹۲۷)

आस है न कोई पास एक तुम्हारी है आस बस है येही आसरा तुम पे करोड़ो दुरूद

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ुसूले सवाब की ख़ातिर बयान सुनने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेते हैं। फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : ''نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ'' मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।

(اَلْمُعجمُ الکبیر لِلطّبرانی ج۶ص۱۸۵حدیث۵۹۴۲)

दो मदनी फूल :-

(1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

www.dawateislami.net

बयान सुनने की नियतें :

निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगा । ۞ टेक लगा कर बैठने के बजाए इल्मे दीन की ता'ज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगा । ۞ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरे के लिये जगह कुशादा करूंगा । ۞ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगा, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगा । ۞ صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوا اللّٰه، تُوبُوْا اِلَى اللّٰه वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वालों की दिलजूई के लिये बुलन्द आवाज़ से जवाब दूंगा । ۞ बयान के बा'द ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़हा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगा ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बयान करने की नियतें :

मैं भी निय्यत करता हूं ۞ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिये बयान करूंगा । ۞ देख कर बयान करूंगा । ۞ पारह 14 सूरतुन्नह्ल, आयत 125 : ﴿اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ﴾ (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अपने रब की राह की त़रफ़ बुलाओ पक्की तदबीर और अच्छी नसीह़त से) और बुख़ारी शरीफ़ (ह़दीस 4361) में वारिद इस फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : بَلِّغُوْا عَنِّيْ وَلَوْ اٰيَةً : ''पहुंचा दो मेरी त़रफ़ से अगर्चे एक ही आयत हो'' में दिये हुवे अह़काम की पैरवी करूंगा । ۞ नेकी का हुक्म दूंगा और बुराई से मन्अ़ करूंगा । ۞ अश्आ़र पढ़ते नीज़ अ़रबी, अंग्रेज़ी और मुश्किल अल्फ़ाज़ बोलते वक़्त दिल के इख़्लास पर तवज्जोह रखूंगा या'नी अपनी इल्मिय्यत की धाक बिठानी मक़्सूद हुई तो बोलने से बचूंगा । ۞ मदनी क़ाफ़िले, मदनी इन्आ़मात, नीज़ अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत वग़ैरा की रग़बत दिलाऊंगा । ۞ क़ह्क़हा लगाने और लगवाने से बचूंगा । ۞ नज़र की ह़िफ़ाज़त का ज़ेह्न बनाने की ख़ातिर ह़त्तल इमकान निगाहें नीची रखूंगा । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह मुबारक महीना हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पसन्दीदा और दुरूदे पाक पढ़ने का महीना है, गुन्यतुत्तालिबीन में है कि शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म में ख़ैरुल बरिय्या सय्यिदुल वरा जनाबे मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक की कसरत की जाती है और येह नबिय्ये मुख़्तार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेजने का महीना है।'' (غُنْيَةُ الطّالبين ج: ١ص: ٣٤٢) लिहाज़ा इस माहे मुबारक में कसरत से दुरूदे पाक पढ़ना चाहिये। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में दुरूदो सलाम की ख़ूब ख़ूब तरग़ीब दिलाई जाती है। इसी वजह से मदनी चैनल पर शहज़ादए अ़त्तार ह़ाजी अबू हिलाल मुह़म्मद बिलाल रज़ा अ़त्तारी अल मदनी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِى ने ''फ़ैज़ाने दुरूदो सलाम'' नामी सिलसिले में दुरूदो सलाम के फ़ज़ाइल बयान फ़रमाए। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मक्तबतुल मदीना ने इसी सिलसिले को तह़रीरी सूरत में पेश करने के लिये 'गुलदस्तए दुरूदो सलाम' के नाम से 660 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब शाएअ़ की है, इस किताब में जा बजा दुरूदे पाक के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल अह़ादीसे मुबारका, बुज़ुर्गाने दीन के अक़्वाल, ईमान अफ़रोज़ ह़िकायात और दुरूदे पाक न पढ़ने की वईदें और ज़िमनन दीगर मौज़ूआ़त पर काफ़ी मा'लूमात मौजूद हैं। आइये शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म में दुरूदे पाक की आ़दत बनाने के लिये इस किताब के सफ़ह़ा 422 से एक ह़िकायत सुनते हैं।

शफ़ाअ़त की नवीद

एक आदमी हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद शरीफ़ नहीं पढ़ता था, एक रात ख़्वाब में ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुवा, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस की त़रफ़ तवज्जोह न फ़रमाई, उस ने अ़र्ज़ की : ''ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क्या आप मुझ से नाराज़ हैं ?'' फ़रमाया : ''नहीं।'' उस शख़्स ने पूछा : ''फिर आप मेरी त़रफ़ तवज्जोह क्यूं नहीं फ़रमाते ?'' फ़रमाया : ''इस लिये कि मैं तुझे नहीं पहचानता।'' उस शख़्स ने अ़र्ज़ की :

www.dawateislami.net

''हुज़ूर ! आप मुझे कैसे नहीं पहचानते, मैं तो आप की उम्मत का एक फ़र्द हूं।'' और उ़लमा फ़रमाते हैं कि आप अपने उम्मतियों को इस से भी ज़ियादा पहचानते हैं जैसे कोई बाप अपने बेटे को पहचानता है। आप ने फ़रमाया : ''उ़लमा ने सच कहा, मगर तू मुझे दुरूद शरीफ़ के ज़रीए याद नहीं करता और मैं अपनी उम्मत के लोगों को दुरूदे पाक पढ़ने की वजह से पहचानता हूं, जितना वोह मुझ पर दुरूद पढ़ते हैं मैं उन्हें इस क़दर ही पहचानता हूं।'' जब वोह शख़्स बेदार हुवा तो उस ने अपने ऊपर लाज़िम कर लिया कि वोह हुज़ूर सरवरे काइनात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर रोज़ाना एक सो मरतबा दुरूदे पाक पढ़ेगा, अब उस शख़्स ने रोज़ाना सो मरतबा दुरूदे पाक पढ़ना अपना मा'मूल बना लिया। कुछ मुद्दत बा'द फिर हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दीदार से मुशर्रफ़ हुवा, आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : मैं अब तुझे पहचानता हूं और मैं तेरी शफ़ाअ़त भी करूंगा। (مکاشفۃ القلوب، ص۷۹ملخصاً)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि दुरूदे पाक पढ़ने वाले से नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم न सिर्फ़ ख़ुश होते हैं बल्कि शरबते दीदार से भी नवाज़ते हैं। लिहाज़ा हमें भी चलते फिरते, उठते बैठते आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ते रहना चाहिये।

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से रिवायत है कि नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उ़म्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है : ''जो मोमिन जुमुआ़ की रात दो रक्अ़त इस त़रह़ पढ़े कि हर रक्अ़त में सूरतुल फ़ातिह़ा के बा'द 25 मरतबा ''قُلْ هُوَ اللهُ اَحَدٌ'' पढ़े, फिर येह दुरूदे पाक ''صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّدِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ'' हज़ार मरतबा पढ़े तो आने वाले जुमुआ़ से पहले ख़्वाब में मेरी ज़ियारत करेगा और जिस ने मेरी ज़ियारत की, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के गुनाह मुआ़फ़ फरमा देगा।''

(القول البدیع، الباب الثالث فی الصلاۃ علیہ فی اوقات مخصوصۃ، ص ۳۸۳)

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی नक़्ल करते हैं : ''जो शख़्स जुमुआ के दिन एक हज़ार बार येह दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा तो वोह सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़्वाब में ज़ियारत करेगा, या जन्नत में अपनी मन्ज़िल देख लेगा, अगर पहली बार में मक़्सद पूरा न हो, तो दूसरे जुमुआ भी इस को पढ़ ले, اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ पांच जुमुओं तक उस को सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत हो जाएगी।''

(تاریخِ مدینہ، ص ۳٤۳، ملخصاً)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मे'राज, दीदारे किब्रिया है और एक आशिक़े रसूल की मे'राज दीदारे मुस्तफ़ा है। कौन ऐसा बद नसीब होगा जिस के दिल में प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दीदार की तमन्ना न हो, यक़ीनन हर आशिक़े रसूल की येही आरज़ू होगी कि..

कुछ ऐसा कर दे मेरे किर्दगार आंखों में
हमेशा नक़्श रहे रूए यार आंखों में
उन्हें न देखा तो किस काम की हैं येह आंखें
कि देखने की है सारी बहार आंखों में

(सामाने बख़्शिश, स. 131)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हज़रते सय्यिदुना शैख़ अबुल मवाहिब शाज़ली عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی फ़रमाते हैं : ''जो शख़्स नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत करना चाहता है उसे चाहिये कि हुज़ूर सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का कसरत से ज़िक्र करता रहे और सादात व औलिया से महब्बत रखे वगरना ख़्वाब (में ज़ियारत) का दरवाज़ा उस पर बन्द है, क्यूंकि येह नुफ़ूसे कुदसिय्या तमाम

www.dawateislami.net

लोगों के सरदार हैं, येह जिन से नाराज़ होते हैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भी उन से नाराज़ हो जाते हैं।''

(افضل الصلوات علی سید السادات، ص۱۲۷)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर हम भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ा चाहते हैं और हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत के ख़्वाहिश मन्द हैं तो दुरूदे पाक को अपने सुब्ह़ो शाम का वज़ीफ़ा बना लेना चाहिये, सच्ची लगन के साथ इस में मगन रहेंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ एक न एक दिन ज़रूर हम पर करम होगा और हमें भी ज़ियारत नसीब हो जाएगी।

मेरे आक़ाए ने'मत, सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن मुख़्तलिफ़ अवक़ात में पढ़े जाने वाले वज़ाइफ़ और दुआओं के मदनी गुलदस्ते 'अल वज़ीफ़तुल करीमा' में हुसूले ज़ियारते मुस्त़फ़ा के लिये दुरूदे पाक के चन्द मख़्सूस सीग़े ज़िक्र करने के बा'द लिखते हैं (दुरूदे पाक) ख़ालिस ता'ज़ीमे शाने अक़्दस के लिये पढ़े, इस निय्यत को भी (दिल में) जगह न दे कि मुझे ज़ियारत अ़त़ा हो, आगे उन का करम बे ह़द व इन्तिहा है। मुंह मदीनए त़य्यिबा (زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا) की त़रफ़ हो और दिल हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़, दस्त बस्ता (हाथ बांध कर) पढ़े (और) येह तसव्वुर बांधे के रौज़ए अन्वर के हुज़ूर ह़ाज़िर हूं और यक़ीन जाने कि हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उसे देख रहे हैं, उस की आवाज़ सुन रहे हैं, उस के दिल के ख़त़रों पर मुत्त़लअ़ हैं।

(अल वज़ीफ़तुल करीमा, स. 28)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर हम भी इख़्लास व इस्तिक़ामत के साथ आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के बताए हुवे त़रीक़े पर अ़मल करते हुवे दुरूदे पाक पढ़ने की आ़दत बनाएंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दीदारे मुस्त़फ़ा से

www.dawateislami.net

मुस्तफ़ीज़ होने के साथ साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ढेरों रह़मतों और करोड़ो बरकतों के ह़क़दार भी बन जाएंगे । आइये तरग़ीब के लिये दुरूदे पाक के मज़ीद फ़ज़ाइल सुनते हैं ।

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی 'जज़्बुल क़ुलूब' में इरशाद फ़रमाते हैं : "जब बन्दए मोमिन एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ता है तो **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) उस पर दस (10) बार रह़मत भेजता है, (दस (10) गुनाह मिटाता है) दस (10) दरजात बुलन्द करता है, दस (10) नेकियां अ़त़ा फ़रमाता है, दस (10) ग़ुलाम आज़ाद करने का सवाब (الترغیب والترھیب، کتاب الذکر والدعائ، الترغیب فی اکثار الصلاۃ علی النبی، ۲/ ۳۲۲، حدیث: ۲۵۷٤) और बीस (20) ग़ज़वात में शुमूलिय्यत का सवाब अ़त़ा फ़रमाता है । (فردوس الاخبار، باب الحائ، ۱/ ۳٤۰، حدیث: ۲٤۸٤) दुरूदे पाक सबबे क़बूलिय्यते दुआ़ है, (فردوس الاخبار، باب الصاد، ۲/ ۲۲، حدیث: ۳۵۵٤) इस के पढ़ने से शफ़ाअ़ते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वाजिब हो जाती है । (معجم الاوسط، من اسمہ بکر، ۲/ ۲۷۹، حدیث: ۳۲۸۵) मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का बाबे जन्नत पर क़ुर्ब नसीब होगा, दुरूदे पाक तमाम परेशानियों को दूर करने के लिये और तमाम ह़ाजात की तक्मील के लिये काफ़ी है, (درمنثور، پ۲۲، الاحزاب، تحت الآیۃ۵٦، ٦/ ٦۵٤، ملخصًا) दुरूदे पाक गुनाहों का कफ़्फ़ारा है (جلاء الافہام، ص۲۳٤) सदक़े का क़ाइम मक़ाम बल्कि सदक़े से भी अफ़्ज़ल है ।" (جذب القلوب، ص۲۲۹)

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی मज़ीद फ़रमाते हैं : "दुरूद शरीफ़ से मुसीबतें टलती हैं, बीमारियों से शिफ़ा ह़ासिल होती है, ख़ौफ़ दूर होता है, ज़ुल्म से नजात ह़ासिल होती है, दुश्मनों पर फ़त्ह़ ह़ासिल होती है, **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की रिज़ा ह़ासिल होती है और दिल में उस की मह़ब्बत पैदा होती है, फ़िरिश्ते उस का ज़िक्र करते हैं, आ'माल की तक्मील होती है, दिलो जान, अस्बाब व माल की पाकीज़गी ह़ासिल होती है, पढ़ने वाला ख़ुशह़ाल हो जाता है, बरकतें ह़ासिल होती हैं, अवलाद दर अवलाद चार (4) नस्लों तक बरकत रहती है ।" (جذب القلوب، ص۲۲۹)

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुसूले बरकत, तरक़्क़िये मा'रीफ़त और हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की कुरबत पाने के लिये दुरूदो सलाम की कसरत इन्तिहाई ज़रूरी है, लिहाज़ा हमें चाहिये कि उठते बैठते, चलते फिरते हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाते बा बरकात पर दुरूदे पाक के फूल निछावर करें, बिल खु़सूस इस माहे शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म में ज़ियादा से ज़ियादा पढ़ें, दिन में रोज़ा रखें और इस की रातों में क़ियाम का मा'मूल बनाएं क्यूंकि येह मुबारक महीना मेरे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का महीना है आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : شَعْبَانُ شَهْرِیْ وَرَمَضَانُ شَهْرُ اللهِ या'नी शा'बान मेरा महीना है और रमज़ान **अल्लाह** तबारक व तआ़ला का महीना है।

(جامع صغیر، حرف الشین، ص: ۳۰۱، حدیث: ٤٨٨٩) (आक़ा का महीना, स. 2)

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस महीने को बेहद पसन्द फ़रमाते और कसरत से रोज़े रखा करते। उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं : मेरे सरताज, साहिबे मे'राज صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पसन्दीदा महीना शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म था कि इस में रोज़े रखा करते फिर इसे रमज़ानुल मुबारक से मिला देते। (سُنَنِ ابوداو، د ج۲ ص۴۷۶ حدیث۲۴۳۱) (आक़ा का महीना, स. 5)

आक़ा शा'बान के अक्सर रोज़े रखते थे

एक और ह़दीसे पाक में है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم शा'बान से ज़ियादा किसी महीने में रोज़े न रखा करते बल्कि पूरे शा'बान ही के रोज़े रख लिया करते थे और फ़रमाया करते : अपनी इस्तिताअ़त के मुताबिक़ अ़मल करो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस वक़्त तक अपना फ़ज़्ल नहीं रोकता जब तक तुम उक्ता न जाओ। (صَحیح بُخاری ج ۱ ص۶۴۸ حدیث ۱۹۷۰)

शारेहे बुख़ारी हज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : मुराद येह है कि शा'बान में अक्सर दिनों में रोज़ा रखते थे इसे तग़लिबन (या'नी ग़लबे और ज़ियादत के लिहाज़ से) कुल (या'नी सारे महीने के रोज़े रखने) से ता'बीर कर दिया। जैसे कहते हैं : "फुलां ने पूरी रात इबादत की" जब कि उस ने रात में खाना भी

खाया हो और ज़रूरियात से फ़राग़त भी की हो, यहां तग़लीबन अक्सर को कुल कह दिया। मज़ीद फ़रमाते हैं : इस ह़दीस से मा'लूम हुवा कि शा'बान में जिसे कुव्वत हो वोह ज़ियादा से ज़ियादा रोज़े रखे। अलबत्ता जो कमज़ोर हो वोह रोज़ा न रखे क्यूंकि इस से रमज़ान के रोज़ों पर असर पढ़ेगा, येही मह़मल (या'नी मुराद व मक़्सद) है उन अह़ादीस का जिन में फ़रमाया गया कि निस्फ़ शा'बान के बा'द रोज़ा न रखो।

(आक़ा का महीना, स. 6) (ترمذی حدیث ۷۳۸)(نزھۃ القاری، ج۳، ص: ۳۸۰، ۳۷۷)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने हमारे प्यारे आक़ा मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस माहे मुबारक को किस क़दर पसन्द फ़रमाते, ह़ालांकि इस महीने में रोज़े फ़र्ज़ नहीं मगर फिर भी आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कसरत से रोज़े रखा करते। अब ज़रा ग़ौर कीजिये कि प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सय्यिदुल मा'सूमीन हो कर भी इस माहे मुबारक के अक्सर दिन रोज़े की ह़ालत में गुज़ारें, तो हम गुनाहगारों को इस माह में रोज़े रखने की कितनी ज़रूरत है ! हमें चाहिये कि रमज़ान के रोज़ों के इ़लावा नफ़्ल रोज़े रखने की भी आ़दत बनाएं, इस में हमारे लिये बे शुमार दीनी फ़वाइद के साथ साथ कसीर दुन्यवी फ़वाइद भी हैं। दीनी फ़वाइद में ईमान की ह़िफ़ाज़त, गुनाहों से बचत, जहन्नम से नजात और जन्नत का ह़ुसूल शामिल हैं और जहां तक दुन्यवी फ़वाइद का तअ़ल्लुक़ है तो रोज़े में दिन के अवक़ात में खाने पीने में सर्फ़ होने वाले वक़्त और अख़राजात की बचत, पेट की इस्लाह़, मे'दे को आराम मिलने के साथ साथ दीगर कई बीमारियों से ह़िफ़ाज़त का सामान है। और तमाम फ़वाइद की अस्ल येह है कि इस से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ राज़ी होता है। हमें भी चन्द दिन की मशक़्क़त सह कर बे शुमार दीनी और दुन्यवी फ़वाइद के ह़ुसूल की कोशिश करनी चाहिये। मज़ीद येह कि नफ़्ल रोज़े रखने का अज्र तो इतना है कि जी चाहता है बस रोज़े रखते ही चले जाएं।

www.dawateislami.net

ताजदारे रिसालत, शफ़ीए रोज़े क़ियामत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ढारस निशान है : "जिस ने सवाब की उम्मीद रखते हुवे एक नफ़्ल रोज़ा रखा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे दोज़ख़ से चालीस (40) साल (का फ़ासिला) दूर फ़रमा देगा।" (کَنْزُالْعُمّال ج۸ص۲۵۵حدیث۲۴۱۴۸)(फ़ैज़ाने सुन्नत, स. 1336)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का एक और फ़रमाने रग़बत निशान है : "अगर किसी ने एक दिन नफ़्ल रोज़ा रखा और ज़मीन भर सोना उसे दिया जाए, जब भी इस का सवाब पूरा न होगा, इस का सवाब तो क़ियामत ही के दिन मिलेगा।" (ابو یعلی ج۵ص۳۵۳حدیث۶۱۰۴) (फ़ैज़ाने सुन्नत, स. 1337)

बेहतरीन अ़मल !

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझे कोई अ़मल बताइये। इरशाद फ़रमाया : "रोज़े रखा करो क्यूंकि इस जैसा अ़मल कोई नहीं।" मैं ने फिर अ़र्ज़ की : "मुझे कोई अ़मल बताइये।" फ़रमाया : "रोज़े रखा करो क्यूंकि इस जैसा कोई अ़मल नहीं।" मैं ने फिर अ़र्ज़ की : "मुझे कोई अ़मल बताइये।" फ़रमाया : "रोज़े रखा करो क्यूंकि इस का कोई मिस्ल नहीं।

(نسائی ج۴ص۱۶۶) (फ़ैज़ाने सुन्नत, स. 1338)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि नफ़्ली रोज़ों की आ़दत बनाने वालों के तो वारे ही नियारे हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन को जहन्नम से 40 साल के फ़ासिले से दूर फ़रमा देता है और अगर उसे ज़मीन के बराबर सोना भी दे दिया जाए तब भी येह उस सवाब को नहीं पहुंच सकता, जो उसे रोज़े क़ियामत दिया जाएगा। लिहाज़ा जहन्नम से बचने और आख़िरत में मिलने वाले ढेरों अज्रो सवाब को पाने के लिये फ़र्ज़ रोज़ों के साथ साथ नफ़्ली रोज़ों जैसे रजब, शा'बान, हर पीर शरीफ़ और जुमा'रात का रोज़ा रखने का भी एहतिमाम करना चाहिये। शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को नफ़्ली रोज़ों से बहुत प्यार है। येही

www.dawateislami.net

वजह है कि आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه साल के ममनूअ़ दिनों के इलावा अक्सर रोज़ादार होते हैं, इस के इलावा पूरे माहे रजबुल मुरज्जब और शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म के रोज़े रखने के साथ साथ पीर शरीफ़ का रोज़ा रखने की भी भरपूर तरग़ीब दिलाते हैं । आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की तरग़ीब की बदौलत बहुत से इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें रजबुल मुरज्जब और शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म के पूरे वरना अक्सर दिन रोज़े रखने की सआ़दत भी ह़ासिल करते हैं । और पीर शरीफ़ का रोज़ा रखना तो हमारे मदनी इन्आ़मात में भी शामिल है । जैसा कि मदनी इन्आ़म नम्बर 58 है । **क्या आप ने इस हफ़्ते पीर शरीफ़ (या रह जाने की सूरत में किसी भी दिन) का रोज़ा रखा ? नीज़ इस हफ़्ते कम अज़ कम एक दिन खाने में जव शरीफ़ की रोटी तनावुल फ़रमाई ?**

शा'बान की आमद पर सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का मा'मूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! माहे शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म में नफ़्ली रोज़े रखने का एहतिमाम करने के साथ साथ हमें इस माह में ख़ूब ख़ूब इ़बादत भी करनी चाहिये । सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का मा'मूल था कि इस मुबारक महीने की आमद होते ही अपना ज़ियादा तर वक़्त नेक आ'माल में सर्फ़ फ़रमाया करते । चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : माहे शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म का चांद नज़र आते ही सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان तिलावते कुरआने पाक में मश्ग़ूल हो जाते, अपने अम्वाल की ज़कात निकालते ताकि कमज़ोर व मिस्कीन लोग माहे रमज़ानुल मुबारक के रोज़ों के लिये तय्यारी कर सकें, हुक्काम क़ैदियों को त़लब कर के जिस पर ह़द (या'नी सज़ा) क़ाइम करना होती उस पर ह़द क़ाइम करते, बक़िय्या को आज़ाद कर देते, ताजिर अपने क़र्ज़े अदा कर देते, दूसरों से अपने क़र्ज़े वुसूल कर लेते । (यूं माहे रमज़ानुल मुबारक का चांद नज़र आने से क़ब्ल ही अपने आप को फ़ारिग़ कर लेते) और रमज़ान शरीफ़ का चांद नज़र आते ही ग़ुस्ल कर के (बा'ज़ ह़ज़रात सारे माह के लिये) ए'तिकाफ़ में बैठ जाते ।''

(غُنْيَةُ الطّالبين ج١ ص ٣٤١) (फ़ैज़ाने सुन्नत, स. 1375)

www.dawateislami.net

शबे बराअत इबादत की रात !

हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भी इस महीने में ख़ूब ख़ूब इबादत फ़रमाते थे। हज़रते सय्यिदा आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا फ़रमाती हैं कि (एक बार) शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म की पन्दरहवीं शब को ताजदारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया : मुझे इस रात में इबादत करने की इजाज़त दो। मैं ने अ़र्ज़ की : जी हां, मेरे मां-बाप आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर कुरबान हों। इस के बा'द आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने क़ियाम फ़रमाया और जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सजदे में तशरीफ़ ले गए तो बहुत त़वील सजदा फ़रमाया। मुझे येह गुमान हुवा कि शायद हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रूह़ क़ब्ज़ कर ली गई है, तो मैं ने अपना हाथ आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़दमे मुबारक पर रख कर अन्दाज़ा किया तो ह़रकत मा'लूम होने से मैं बेह़द ख़ुश हुई। (شعب الایمان، ۳/۳۸۴، حدیث: ۳۸۳۷)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मह़बूबे ख़ुदा हैं और सय्यिदुल मा'सूमीन होने के बा वुजूद इस मुबारक रात में किस क़दर इबादत किया करते थे। हमें भी इस रात में आतशबाज़ी और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी वाले कामों से बचते हुवे ख़ूब ख़ूब इबादत करनी चाहिये।

मन्क़ूल है कि जो इस मुबारक रात में सो (100) रक्अ़त पढ़े, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की त़रफ़ 100 फ़िरिश्ते भेजता है, इन में से 30 उसे जन्नत की ख़ुश ख़बरी सुनाते हैं, 30 उसे जहन्नम की आग से बचाते हैं, 30 फ़िरिश्ते उस की दुन्यवी आफ़ात को टालते हैं और 10 फ़िरिश्ते उसे शैत़ान के मक्रो फ़रेब से बचाते हैं। (حاشیۃ الصاوی علی الجلالین، ۵/۱۹۰۸، سورۃ الدخان، تحت آیۃ ۴)

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं कि मैं ने शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को

www.dawateislami.net

शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म की पन्दरहवीं शब में देखा कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم खड़े हुवे, फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने 14 रक्अ़तें पढ़ीं। नमाज़ से फ़राग़त के बा'द आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने 14 बार सूरतुल फ़ातिहा, 14 बार قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَد (या'नी सूरतुल इख़्लास) 14 बार قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَق (या'नी सूरतुल फ़लक़) और 14 बार قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاس (या'नी सूरतुन्नास) की तिलावत फ़रमाई। इस के बा'द एक बार आयतुल कुरसी और لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई। जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस से फ़ारिग़ हुवे तो मैं ने इस फ़े'ल के मुतअ़ल्लिक़ पूछा, तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स इस त़रह़ करेगा जैसा तू ने देखा, तो उस के लिये 20 मक़्बूल ह़ज और 20 साल के मक़्बूल रोज़ों का सवाब है। और अगर रोज़े की ह़ालत में सुब्ह़ करेगा तो उस के गुज़श्ता एक साल और आने वाले एक साल के रोज़ों का सवाब है। (شعب الایمان، ۳/۳۸۶، باب فی الصیام/ماجاء فی لیلۃ النصف من شعبان)

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं कि मुझ से प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के 30 सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने येह बात बयान की है कि जो कोई शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म की पन्दरहवीं शब में 100 रक्अ़तें इस त़रह़ पढ़ें कि हर दो रक्अ़त पर सलाम फेरे और हर रक्अ़त में सूरतुल फ़ातिह़ा के बा'द 11 बार قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَد (या'नी सूरतुल इख़्लास) पढ़े, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की त़रफ़ 70 बार नज़रे रह़मत फ़रमाएगा और हर नज़र में उस की 70 ह़ाजतें पूरी फ़रमाएगा। इन ह़ाजतों में सब से कम मग़्फ़िरत है।

(روح البیان ۸/۴۰۳، سورۃ الدخان، تحت الآیۃ ۳، ملتقطا)

ह़दीसे पाक में है कि जो शख़्स पांच (5) रातों में जागे और वोह रातें इ़बादत में गुज़ारे तो ऐसे शख़्स के लिये जन्नत वाजिब हो जाती है। इन में से एक शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म की पन्दरहवीं शब भी है।

(روح البیان ۸/۴۰۳، سورۃ الدخان، تحت الآیۃ ۳، ملخصاً)

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने इस रात में इबादत करने के किस क़दर फ़ज़ाइल हैं, हमें भी न सिर्फ़ इन मुबारक रातों में क़ियाम की आ़दत बनानी चाहिये बल्कि फ़राइज़ व वाजिबात की अदाएगी के साथ साथ जिस क़दर आसानी हो नफ़्ली इबादात की भी आ़दत बनानी चाहिये । हमारे अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلام का येह मा'मूल था कि वोह दिन में रोज़ा रखते और रातें क़ियाम में गुज़ारते थे ।

मन्क़ूल है कि सरकारे ग़ौसे आ'ज़म और सय्यिदुना इमामे आ'ज़म رَحِمَهُمَا اللهُ الاَكْرَم ने चालीस (40) बरस इशा के वुज़ू से नमाज़े फ़ज्र अदा फ़रमाई । और हुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसुल आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ने पच्चीस (25) बरस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत करते हुवे इराक शरीफ़ के जंगलात में गुज़ार दिये ।

(بہجۃ الاسرار، ذکر فصول من کلامہ مرصعاً بشیئ من عجائب، ص ۱۱۸)

औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने कई कई बरस मुसलसल रोज़े भी रखे, रोज़ाना तीन तीन सो (300-300), पांच पांच सो (500-500) और हज़ार हज़ार (1000-1000) नवाफ़िल अदा किये । रोज़ाना पूरा क़ुरआने पाक तिलावत कर लेते, कई कई हज़ार मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा करते । अल ग़रज़ वोह पाकीज़ा हस्तियां इस दुन्या को आख़िरत की खेती समझ कर इस में ख़ूब अच्छे अच्छे काम किया करतीं थीं । अगर हम भी जन्नत की आ'ला ने'मतों से महज़ूज़ (या'नी लुत्फ़ अन्दोज़) होना चाहते हैं तो हमें बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن के त़रीक़े पर चलते हुवे, फ़िक्रे आख़िरत करते हुवे और गुनाहों से बचते हुवे नेक आ'माल की कसरत करनी होगी ।

बना दे मुझे नेक नेकों का सदक़ा गुनाहों से हर दम बचा या इलाही
इबादत में गुज़रे मेरी ज़िन्दगानी करम हो करम या ख़ुदा या इलाही
मुसलमां है अ़त्तार तेरी अ़त़ा से हो ईमान पर ख़ातिमा या इलाही

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस मुबारक रात में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मतें अपने बन्दों पर छमा छम बरसती हैं, इस लिये इस मुक़द्दस रात में ज़ियादा से ज़ियादा इ़बादत व रियाज़त का एहतिमाम, गुनाहों से बचने का इन्तिज़ाम और कसरते दुरूदो सलाम के ज़रीए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से कसीर इन्आ़मो इकराम ह़ासिल करना चाहिये । पहले के मदनी सोच रखने वाले मुसलमान इन मुतबर्रक अय्याम में रब्बुल अनाम عَزَّوَجَلَّ की ज़ियादा से ज़ियादा इ़बादत कर के उस का क़ुर्ब ह़ासिल करने की कोशिश करते थे, मगर आज मुसलमानों को न जाने क्या हो गया है कि इन मुबारक अय्याम की क़द्र नहीं करते और अपना क़ीमती वक़्त मसाजिद में गुज़ारने या नेक इजतिमाआ़त में शिर्कत करने के बजाए फ़ुज़ूलिय्यात में बरबाद कर देते हैं, ह़ालांकि इस रात **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ख़ास तजल्ली फ़रमाता है और अपने बे शुमार बन्दों की बख़्शिश व मग़फ़िरत फ़रमाता है ।

शबे बराअत बख़्शिश की रात !

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा, शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से मरवी है कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم का फ़रमाने अ़ज़ीम है : जब पन्दरह (15) शा'बान की रात आए तो इस में क़ियाम (या'नी इ़बादत) करो और दिन में रोज़ा रखो । बेशक **अल्लाह** तआ़ला ग़ुरूबे आफ़्ताब से आस्माने दुन्या पर ख़ास तजल्ली फ़रमाता और कहता है : "है कोई मुझ से मग़फ़िरत त़लब करने वाला कि उसे बख़्श दूं ! है कोई रोज़ी त़लब करने वाला कि उसे रोज़ी दूं ! है कोई मुसीबत ज़दा कि उसे आ़फ़िय्यत अ़त़ा करूं ! है कोई ऐसा ! है कोई ऐसा ! और येह उस वक़्त तक फ़रमाता है कि फ़ज्र तुलूअ़ हो जाए ।"

(سُنَنِ ابنِ ماجہ ج۲ص۱۶۰حدیث۱۳۸۸ دار المعرفۃ بیروت) (आक़ा का महीना, स. 14)

अफ़्सोस सद अफ़्सोस ! बा'ज़ नादान मुसलमान इस रात का एह़तिराम करना तो दूर की बात बल्कि जो मुसलमान बीमार, बुढ्ढे या बच्चे घरों में मह़्वे

आराम या ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ के साथ रब तआ़ला की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर इ़बादत में मश्ग़ूल होते हैं, उन्हें आतशबाज़ी के ज़रीए़ तक्लीफ़ पहुंचाते और उन की इ़बादत में ख़लल का सबब बनते हैं। याद रखिये ! मुसलमानों को सताना, उन का दिल दुखाना और उन्हें त़रह़ त़रह़ से अज़िय्यतें पहुंचाना येह सब नाजाइज़ व ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाले काम हैं, ज़रा सोचिये ! इस मुबारक रात में जब सब की मग़्फ़िरत हो रही हो तो हमारी इन्ही नापाक ह़रकतों की वजह से हमारी बख़्शिश को रोक दिया जाए, तो उस वक़्त हमारा क्या बनेगा ? इस लिये अगर हम से दानिस्ता या ग़ैर दानिस्ता त़ौर पर किसी मुसलमान की दिल आज़ारी हुई या किसी का ह़क़ तलफ़ कर दिया, या किसी के लिये अपने दिल में दुश्मनी बिठा ली है तो शबे बराअत आने से पहले पहले मुआ़फ़ी तलाफ़ी कर लीजिये और आयिन्दा इन गुनाहों से बाज़ रहने की निय्यत भी फ़रमा लीजिये क्यूंकि ज़िन्दगी का कोई भरोसा नहीं, क्या ख़बर इसी साल हमारी मौत वाक़ेअ़ हो जाए और हम ग़फ़्लत में ही पड़े रहें।

लिहाज़ा जल्द अज़ जल्द अपने ह़ुक़ूक़ मुआ़फ़ करवा लीजिये और आतशबाज़ी के ज़रीए़ इ़बादत गुज़ारों, बीमारों और शीर ख़्वारों को तक्लीफ़ पहुंचाने से तौबा कर लीजिये। याद रखिये ! आतशबाज़ी मुसलमानों की नहीं बल्कि ग़ैर मुस्लिमों की ईजाद है। चुनान्चे, मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "आतशबाज़ी नमरूद बादशाह ने ईजाद की जब कि उस ने ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को आग में डाला और आग गुलज़ार हो गई तो उस के आदमियों ने आग के अनार भर कर इन में आग लगा कर ह़ज़रते ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام की त़रफ़ फेंके। (इस्लामी ज़िन्दगी, स. 63) (फ़ैज़ाने सुन्नत, स. 1396)

आतशबाज़ी की येह नापाक रस्म अब मुसलमानों में ज़ोर पकड़ती जा रही है, मुसलमानों का करोड़हा करोड़ रूपिया हर साल आतशबाज़ी की नज़्र

www.dawateislami.net

हो जाता है और आए दिन येह ख़बरें आती हैं कि फ़ुलां जगह आतशबाज़ी से इतने घर जल गए और इतने आदमी झुलस कर मर गए वग़ैरा वग़ैरा । इस में जान का ख़त़रा, माल की बरबादी और मकान में आग लगने का अन्देशा है, फिर येह काम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी भी है । ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "आतशबाज़ी बनाना, बेचना, ख़रीदना और ख़रीदवाना, चलाना और चलवाना सब ह़राम है ।"

(इस्लामी ज़िन्दगी, स. 63) (फ़ैज़ाने सुन्नत, स. 1396)

ऐ ख़ासए ख़ासाने रुसुल वक़्ते दुआ़ है उम्मत पे तेरी आ के अ़जब वक़्त पड़ा है
फ़रयाद है ऐ कश्तिये उम्मत के निगहबां बेड़ा येह तबाही के क़रीब आन लगा है

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शबे बराअत में आतशबाज़ी के ज़रीए मुसलमानों की इबादत में ख़लल पैदा करने के बजाए ख़ुद भी ख़ूब ख़ूब इबादत कीजिये, रो रो कर अपने गुनाहों की मुआ़फ़ी मांगिये, अपनी बख़्शिश व मग़फ़िरत के साथ साथ सुन्नत पर अ़मल की निय्यत से क़ब्रिस्तान जा कर फ़िक्रे आख़िरत पैदा करने के लिये क़ब्रों की ज़ियारत भी कीजिये और अपने मर्ह़ूमीन समेत तमाम मुस्लिमीन के लिये दुआ़ए मग़फ़िरत भी कीजिये ।

शबे बराअत और क़ब्रों की ज़ियारत !

उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं : मैं ने एक रात (या'नी शा'बान की पन्दरहवीं रात) सरवरे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को न देखा तो बक़ीए पाक में मुझे मिल गए, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया : क्या तुम्हें इस बात का डर था कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस का रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तुम्हारी ह़क़ तलफ़ी करेंगे ? मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मैं ने ख़याल किया था कि शायद आप अज़्वाजे मुत़ह्हरात (مُـطَـهَّـرات) में से किसी के पास तशरीफ़ ले गए होंगे । तो फ़रमाया : "बेशक **अल्लाह** तआ़ला शा'बान की

www.dawateislami.net

पन्दरहवीं रात आस्माने दुन्या पर तजल्ली फ़रमाता है, पस क़बीलए बनी कल्ब की बकरियों के बालों से भी ज़ियादा गुनहगारों को बख़्श देता है ।"

(سُنَنِ تِرمِذی ج۲ص۱۸۳ حدیث۷۳۹ دارالفکر بیروت) (फ़ैज़ाने सुन्नत, स. 1393)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शबे बराअत में इस्लामी भाइयों का क़ब्रिस्तान जाना सुन्नत है (मगर इस्लामी बहनों को शरअ़न इस की इजाज़त नहीं, वोह घर में रह कर ही इ़बादत और ईसाले सवाब करें) इस्लामी भाई क़ब्रिस्तान जा कर अपने मर्हूमीन के लिये ईसाले सवाब और दुआ़ए मग़फ़िरत करें कि इस से मुर्दों को उन्सिय्यत ह़ासिल होती हैं और अगर उन के लिये दुआ़ए मग़फ़िरत न की जाए तो मग़मूम हो जाते हैं । चुनान्चे,

क़ब्रिस्तान के मुर्दे ख़्वाब में आ पहुंचे !

एक साह़िब का मा'मूल था कि वोह क़ब्रिस्तान में आ कर बैठ जाते और जब भी कोई जनाज़ा आता, उस की नमाज़ पढ़ते और शाम के वक़्त क़ब्रिस्तान के दरवाज़े पर खड़े हो कर इस त़रह़ दुआ़एं देते : "(ऐ क़ब्र वालो !) ख़ुदा तुम को उन्स अ़ता करे, तुम्हारी ग़ुर्बत पर रह़म करे, तुम्हारे गुनाह मुआ़फ़ फ़रमाए और नेकियां क़बूल करे ।" वोही साह़िब फ़रमाते हैं : एक शाम (ब वक़्ते रुख़्सत) मैं अपना क़ब्रिस्तान वाला मा'मूल पूरा न कर सका, या'नी उन्हें दुआ़एं दिये बिग़ैर ही घर आ गया । मेरे ख़्वाब में एक कसीर मख़्लूक़ आ गई ! मैं ने उन से पूछा कि आप लोग कौन हैं और क्यूं आए हैं ? बोले : हम क़ब्रिस्तान वाले हैं, आप ने आ़दत कर ली थी कि घर आते वक़्त हम को हदिय्या (या'नी तोह़्फ़ा) देते थे और आज न दिया । मैं ने कहा : वोह हदिय्या (ھَ-دِی-یہ) क्या था ? तो उन्हों ने कहा : वोह हदिय्या दुआ़ओं का था । मैं ने कहा : अच्छा, अब येह हदिय्या मैं तुम को फिर से दूंगा । इस के बा'द मैं ने अपने इस मा'मूल को कभी तर्क न किया ।

(شرحُ الصُّدور، ص۲۲۶) (क़ब्र वालों की 25 ह़िकायात, स. 9)

www.dawateislami.net

मर्हूम वालिद साहिब ने ख़्वाब में आ कर कहा कि...

हज़रते सय्यिदुना इमाम सुफ़्यान बिन उ़यैना رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का बयान है : जब मेरे वालिद साहिब का इन्तिक़ाल हो गया तो मैं ने बहुत आहो बुका की (या'नी ख़ूब रोया धोया) और उन की क़ब्र पर रोज़ाना हाज़िरी देने लगा, फिर रफ़्ता रफ़्ता कुछ कमी आ गई। एक रोज़ वालिदे मर्हूम ने ख़्वाब में तशरीफ़ ला कर फ़रमाया : "ऐ बेटे ! तुम ने क्यूं ताख़ीर की ?" मैं ने पूछा : "क्या आप को मेरे आने का इल्म हो जाता है ?" फ़रमाया : "क्यूं नहीं, मुझे तुम्हारी हर हाज़िरी की ख़बर हो जाती थी और मैं तुम्हें देख कर ख़ुश होता था, नीज़ मेरे पड़ोसी मुर्दे भी तुम्हारी दुआ़ से राज़ी होते थे।" चुनान्चे, इस ख़्वाब के बा'द मैं ने पाबन्दी से वालिद साहिब की क़ब्र पर जाना शुरूअ़ कर दिया।

(شرح الصُّدور، ص ۲۲۷) (क़ब्र वालों की 25 हिकायात, स. 14)

रूहें घरों पर आ कर ईसाले सवाब का मुतालबा करती हैं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा मरने वाले अपनी क़ब्रों पर आने जाने वालों को पहचानते हैं और उन्हें ज़िन्दों की दुआ़ओं से फ़ाइदा पहुंचता है, जब ज़िन्दा लोगों की त़रफ़ से ईसाले सवाब के तोहूफ़े आना बन्द होते हैं, तो उन को आगाही हासिल हो जाती है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन्हें इजाज़त देता है तो घरों पर जा कर ईसाले सवाब का मुतालबा भी करते हैं। मेरे आक़ा, आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा रज़विय्या (मुख़र्रजा) जिल्द 9 के सफ़्हा 650 पर नक़्ल करते हैं : मोअमिनीन की रूहें (1) हर शबे जुमुआ़ (या'नी जुमा'रात और जुमुआ़ की दरमियानी रात) (2) रोज़े ईद (3) रोज़े आ़शूरा और (4) शबे बराअत को अपने घर आ कर बाहर खड़ी रहती हैं और हर रूह़ ग़मनाक बुलन्द आवाज़ से निदा करती (या'नी पुकार कर कहती) है कि ऐ मेरे घर वालो ! ऐ मेरी अवलाद ! ऐ मेरे क़राबत दारो ! (हमारे ईसाले सवाब की निय्यत से) सदक़ा (ख़ैरात) कर के हम पर मेहरबानी करो। (क़ब्र वालों की 25 हिकायात, स. 10)

www.dawateislami.net

सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशादे मुश्कबार है : मुर्दे का ह़ाल क़ब्र में डूबते हुवे इन्सान की मानिन्द है कि वोह शिद्दत से इन्तिज़ार करता है कि बाप या मां या भाई या किसी दोस्त की दुआ़ उस को पहुंचे और जब किसी की दुआ़ उसे पहुंचती है तो उस के नज़्दीक वोह **दुन्या व माफ़ीहा** (या'नी दुन्या और इस में जो कुछ है) से बेहतर होती है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ब्र वालों को उन के ज़िन्दा मुतअ़ल्लिक़ीन की त़रफ़ से हदिय्या किया हुवा सवाब पहाड़ों की मानिन्द अ़त़ा फ़रमाता है, ज़िन्दों का हदिय्या (या'नी तोह़्फ़ा) मुर्दों के लिये "दुआ़ए मग़्फ़िरत करना है।"

(शुعب الایمان ج٦ ص٢٠٣ حديث٧٩٠٥) (क़ब्र वालों की 25 ह़िकायात, स. 15)

है कौन कि गिर्या करे या फ़ातिह़ा को आए बे कस के उठाए तेरी रह़मत के भरन फूल

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 79)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मजलिसे लंगरे रसाइल का तआ़रुफ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें भी अपने मर्ह़ूमीन की बख़्शिश व मग़्फ़िरत के लिये ख़ूब ख़ूब सदक़ा व ख़ैरात और नेक आ'माल का सवाब पहुंचाने के साथ साथ लंगरे रसाइल की भी तरकीब बनानी चाहिये। लंगरे रसाइल से मुराद येह है कि मक्तबतुल मदीना से कुतुबो रसाइल और VCD'S ख़रीद कर हुसूले सवाब और मुसलमानों की ख़ैर ख़्वाही की निय्यत से मुफ़्त तक़्सीम की जाएं। दा'वते इस्लामी के कमो बेश 97 शो'बों में से एक शो'बा मजलिसे लंगरे रसाइल भी है, जो दर ह़क़ीक़त मक्तबतुल मदीना ही का एक शो'बा है, जिस का काम घर घर, दफ़्तर दफ़्तर, दुकान दुकान, स्कूल्ज़, कॉलेजिज़, यूनीवर्सिटीज़ और जामिआ़त व मदारिस में सारा साल शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه और मक्तबतुल मदीना की दीगर मत़बूआ़ कुतुबो रसाइल और VCD'S वग़ैरा की ज़ाती त़ौर पर ह़स्बे इस्तित़ाअ़त और मुख़य्यर इस्लामी भाइयों से राबित़ा कर के लंगरे रसाइल की तरकीब करना है।

मजलिसे लंगरे रसाइल के ज़िम्मेदारान बिल ख़ुसूस दा'वते इस्लामी वालों को और बिल उ़मूम हर आ़शिक़े रसूल को येह ज़ेह्न देने की कोशिश करते हैं कि वोह इस ह़दीसे पाक : ''تَهَادَوْا تَحَابُّوْا'' (या'नी एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी) पर अ़मल की निय्यत से हर माह मक्तबतुल मदीना से जारी कर्दा कम अज़ कम 12 कुतुबो रसाइल या एक VCD ज़ाती रक़म से ख़रीद कर अपने रिश्तेदारों, क़रीबी दुकानदारों, त़लबा व असातिज़ा वग़ैरा में तक़्सीम करें नीज़ मर्ह़ूमीन के ईसाले सवाब के लिये तीजा, दसवां, चालीसवां, बरसी वग़ैरा के मवाक़ेअ़ पर भी रसाइल पर मर्ह़ूमीन के नाम डलवा कर मुफ़्त तक़्सीम की तरकीब बनाया करें। शादी कार्ड्ज़ में भी एक एक रिसाला नथी (या'नी शामिल) कर दिया करें कि अगर, आप का दिया हुवा रिसाला या पेम्फ़्लेट पढ़ कर किसी का दिल चोट खा गया और वोह नमाज़ी और सुन्नतों का आ़दी बन गया तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ आप का भी दोनों जहां में बेड़ा पार होगा। याद रहे कि मदनी अ़तिय्यात से लंगरे रसाइल करने की इजाज़त नहीं है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म बिल ख़ुसूस शबे बराअत में ज़ियादा से ज़ियादा इ़बादत करने और अपनी बख़्शिश व मग़फ़िरत के साथ साथ अपने मर्ह़ूमीन के लिये भी दुआ़ए मग़फ़िरत और ईसाले सवाब की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمین بجاہِ النبی الامین صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बयान का ख़ुलासा :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज के बयान में हम ने शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म के फ़ज़ाइल सुनने की सआ़दत ह़ासिल की। येह मुबारक महीना हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का पसन्दीदा और आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदो सलाम पढ़ने का महीना है। हमें इस माहे मुबारक का एह़तिराम करते हुवे ज़ियादा से ज़ियादा इ़बादत व तिलावत, नफ़्ली रोज़ों की कसरत,

www.dawateislami.net

फ़िक्रे आख़िरत पैदा करने के लिये क़ब्रों की ज़ियारत, मर्हूमीन की बख़्शिश के लिये दुआ़ए मग़फ़िरत करनी चाहिये और अपने दोस्त व अह़बाब, घर वालों, रिश्तेदारों और मह़ल्ले वालों को आतशबाज़ी और दीगर बुरे कामों से बचने और नेकियां करने की तरग़ीब दिलानी चाहिये । हो सके तो इस माह में घर घर इजतिमाए़ ज़िक्रो ना'त मुनअ़क़िद कीजिये और दा'वते इस्लामी के ज़ेरे एहतिमाम शबे बराअत के सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत की भी निय्यत कर लीजिये और ख़ुद को गुनाहों से बचाने, नेकियों का जज़्बा पाने और नेकी की दा'वत की धूमें मचाने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता रहिये ।

12 मदनी कामों में ह़िस्सा लीजिये :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नेकी की दा'वत आ़म करने के लिये ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों में बढ़ चढ़ कर ह़िस्सा लीजिये । इन 12 मदनी कामों में से एक मदनी काम चौक दर्स भी है, आज के इस पुर फ़ितन दौर में जब कि बाज़ारों में बे ह़याई, बे पर्दगी, फ़ह़्ह़ाशी, झूट, ग़ीबत, गाली गलोच और वा'दा ख़िलाफ़ी जैसे गुनाहों का एक तूफ़ान बपा हो, ऐसे मैं वहां जा कर लोगों को नेकी की दा'वत देना सआ़दत से कम नहीं है । याद रहे ! चौक दर्स में इ़ल्मे दीन ही की बातें बयान की जाती हैं, इस त़रह़ चौक दर्स नेकी की दा'वत देने और बुराई से रोकने का एक बेहतरीन ज़रीआ़ है और नेकी की दा'वत देने के तो बे शुमार फ़ज़ाइल हैं, चुनान्चे, मन्क़ूल है कि एक बार मह़बूबे रब्बुल आ़लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मिम्बरे अक़्दस पर जल्वा फ़रमा थे, एक सह़ाबी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم लोगों में सब से अच्छा कौन है ? फ़रमाया : लोगों में से वोह शख़्स सब से अच्छा है जो कसरत से क़ुरआने करीम की तिलावत करे, ज़ियादा मुत्तक़ी हो, सब से ज़ियादा नेकी का हुक्म देने और बुराई से मन्अ़ करने वाला हो और सब से ज़ियादा सिलए रेह़्मी (या'नी रिश्ते दारों के साथ अच्छा बरताव) करने वाला हो । (مُسندِ اِمام احمد ج۱۰ ص۴۰۲ حدیث ۲۷۵۰۴)

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़रमान के मुत़ाबिक़ सब से अच्छा वोह शख़्स है जो सब से ज़ियादा नेकी का हुक्म देने वाला और बुराई से मन्अ़ करने वाला हो । चौक दर्स देना नेकी की दा'वत देने और बुराई से मन्अ़ करने का मुअस्सिर ज़रीआ़ है । हमें भी वक़्तन फ़ वक़्तन **चौक दर्स** देने, सुनने की सआ़दत ह़ासिल करते रहना चाहिये । इस से ख़ूब ख़ूब दीनी मा'लूमात भी ह़ासिल होंगी और اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ सवाब भी मिलेगा ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल की बरकत से बहुत से इस्लामी भाई गुनाहों भरी ज़िन्दगी छोड़ कर सुन्नतों के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने वाले बन गए । आइये एक मदनी बहार आप के गोश गुज़ार करता हूं । चुनान्चे,

लाड-प्यार ने मुझे ढीट बना दिया था

शाहदरा (मर्कज़ुल औलिया लाहौर) के एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है, मैं अपने वालिदैन का इक लौता बेटा था, ज़ियादा लाड प्यार ने मुझे ह़द दरजा ढीट और मां-बाप का सख़्त ना फ़रमान बना दिया था, रात गए तक आवार गर्दी करता और सुब्ह़ देर तक सोया रहता । मां-बाप समझाते तो उन को झाड़ देता । वोह बेचारे बा'ज़ अवक़ात रो पड़ते । दुआ़एं मांगते मांगते मां की पलकें भीग जातीं । उस अ़ज़ीम लम्ह़े पर लाखों सलाम जिस 'लम्ह़े' में मुझे दा'वते इस्लामी वाले एक आ़शिक़े रसूल से मुलाक़ात की सआ़दत मिली और उस ने मह़ब्बत और प्यार से इनफ़िरादी कोशिश करते हुवे मुझ पापी व बदकार को मदनी क़ाफ़िले में सफ़र के लिये तय्यार किया । चुनान्चे, मैं आ़शिक़ाने रसूल के हमराह तीन[3] दिन के मदनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बन गया । न जाने उन आ़शिक़ाने रसूल ने तीन[3] दिन के अन्दर क्या घोल कर पिला दिया कि मुझ जैसे ढीट इन्सान का पथ्थर नुमा दिल, जो मां-बाप के आंसूओं से भी न पिघलता था मोम बन गया, मेरे क़ल्ब में मदनी

www.dawateislami.net

इन्क़िलाब बरपा हो गया और मैं मदनी क़ाफ़िले से नमाज़ी बन कर लौटा। घर आ कर मैं ने सलाम किया, वालिद साहिब की दस्त बोसी की और अम्मी जान के क़दम चूमे। घर वाले हैरान थे ! इस को क्या हो गया है कि कल तक जो किसी की बात सुनने के लिये तय्यार नहीं था, वोह आज इतना बा अदब बन गया है ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल की सोहबत ने मुझे यक्सर बदल कर रख दिया और येह बयान देते वक़्त मुझ साबिक़ा बे नमाज़ी को मुसलमानों को नमाज़े फ़ज्र के लिये जगाने की या'नी **सदाए मदीना** लगाने की ज़िम्मेदारी मिली हुई है। (फ़ैज़ाने सुन्नत, स. 1370)

गर्चे आ'माले बद, और अफ़्आ़ले बद ने है रुस्वा किया, क़ाफ़िले में चलो
कर सफ़र आओगे, तुम सुधर जाओगे, मांगो चल कर दुआ़, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नौशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।

(مِشْکٰوۃُ الْمَصابِیح ج ا ص ۵۵ حدیث ۱۷۵)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म के ग्यारह (11) हुरूफ़ की निस्बत से क़ब्रिस्तान की ह़ाज़िरी के 11 मदनी फूल

﴾1﴿ नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيم का फ़रमाने अ़ज़ीम है : मैं ने तुम को ज़ियारते कुबूर से मन्अ़ किया था, अब तुम क़ब्रों की ज़ियारत करो कि वोह दुन्या में बे रग़बती का सबब है और आख़िरत की याद दिलाती है।

(سُنَنِ اِبن ماجہ ج ۲ ص ۲۵۲ حدیث ۱۵۷۱ دار المعرفۃ بیروت)

﴾2﴿ (वलिय्युल्लाह के मज़ार शरीफ़ या) किसी भी मुसलमान की क़ब्र की ज़ियारत को जाना चाहे तो मुस्तहब येह है कि पहले अपने मकान पर (ग़ैर मकरूह वक़्त में) दो[2] रक्अ़त नफ़्ल पढ़े, हर रक्अ़त में सूरतुल फ़ातिहा के बा'द एक[1] बार आयतुल कुरसी, और तीन[3] बार सूरतुल इख़्लास पढ़े और इस नमाज़ का सवाब साहिबे क़ब्र को पहुंचाए, **अल्लाह** तआ़ला उस फ़ौत शुदा बन्दे की क़ब्र में नूर पैदा करेगा और इस (सवाब पहुंचाने वाले) शख़्स को बहुत ज़ियादा सवाब अ़ता फ़रमाएगा। (فتاوی عالمگیری ج۵ص۳۵۰دارالفکربیروت)

﴾3﴿ मज़ार शरीफ़ या क़ब्र की ज़ियारत के लिये जाते हुवे रास्ते में फ़ुज़ूल बातों में मश्ग़ूल न हो। (ایضاً)

﴾4﴿ क़ब्रिस्तान में उस आ़म रास्ते से जाए, जहां माज़ी में कभी भी मुसलमानों की क़ब्रें न थीं, जो रास्ता नया बना हुवा हो उस पर न चले, 'रद्दुल मुह़्तार' में है : (क़ब्रिस्तान में क़ब्रें पाट कर) जो नया रास्ता निकाला गया हो उस पर चलना ह़राम है। (رَدُّالْمحتار ج۱ص۶۱۲) बल्कि नए रास्ते का सिर्फ़ गुमाने ग़ालिब हो तब भी उस पर चलना ना जाइज़ व गुनाह है। (دُرِّمُختار ج۳ص۱۸۳دارالمعرفۃ بیروت)

﴾5﴿ कई मज़ाराते औलिया पर देखा गया है कि ज़ाइरीन की सहूलत की ख़ातिर मुसलमानों की क़ब्रें मिस्मार (या'नी तोड़ फोड़) कर के फ़र्श बना दिया जाता है, ऐसे फ़र्श पर लेटना, चलना, खड़ा होना, तिलावत और ज़िक्रो अज़्कार के लिये बैठना वग़ैरा ह़राम है, दूर ही से फ़ातिहा पढ़ लीजिये।

﴾6﴿ ज़ियारते क़ब्र मय्यित के मुवाजहा में (या'नी चेहरे के सामने खड़े हो कर हो और इस (या'नी क़ब्र वाले) की पाइंती (پا۔اِن۔تی या'नी क़दमों) की त़रफ़ से जाए कि उस की निगाह के सामने हो, सिरहाने से न आए कि उसे सर उठा कर देखना पड़े। (फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा जि. 9, स.532 रज़ा फ़ाऊन्डेशन मर्कजुल औलिया लाहौर)

﴾7﴿ क़ब्रिस्तान में इस त़रह़ खड़े हो कि क़िब्ले की त़रफ़ पीठ और क़ब्र वालों के चेहरों की त़रफ़ मुंह हो इस के बा'द कहे :

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا اَهْلَ الْقُبُوْرِ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَنَا وَلَكُمْ اَنْتُمْ لَنَا سَلَفٌ وَّنَحْنُ بِالْاَثَرِ

www.dawateislami.net

तर्जमा : ऐ क़ब्र वालो ! तुम पर सलाम हो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारी और तुम्हारी मग़फ़िरत फ़रमाए, तुम हम से पहले आ गए और हम तुम्हारे बा'द आने वाले हैं । (فتاوٰی عالمگیری ج ۵ ص ۳۵۰)

﴾8﴿ जो क़ब्रिस्तान में दाख़िल हो कर येह कहे :

اَللّٰھُمَّ رَبَّ الْاَجْسَادِ الْبَالِیَۃِ وَالْعِظَامِ النَّخِرَۃِ الَّتِیْ خَرَجَتْ مِنَ الدُّنْیَا وَھِیَ بِکَ مُؤْمِنَۃٌ اَدْخِلْ عَلَیْھَا رَوْحًا مِّنْ عِنْدِکَ وَسَلَامًا مِّنِّیْ

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ (ऐ) गल जाने वाले जिस्मों और बोसीदा हड्डियों के रब ! जो दुन्या से ईमान की ह़ालत में रुख़्सत हुवे तू उन पर अपनी रह़मत और मेरा सलाम पहुंचा दे । तो ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَیْہِ السَّلَام से ले कर इस वक़्त तक जितने मोमिन फ़ौत हुवे सब उस (या'नी दुआ़ पढ़ने वाले) के लिये दुआ़ए मग़फ़िरत करेंगे । (مُصَنَّف ابن اَبی شَیْبہ ج ۱۰ ص ۱۵ دار الفکر بیروت)

﴾9﴿ शफ़ीए़ मुजरिमान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने शफ़ाअ़त निशान है : जो शख़्स क़ब्रिस्तान में दाख़िल हुवा फिर उस ने, सूरतुल फ़ातिह़ा, सूरतुत्तकासुर और सूरतुल इख़्लास पढ़ी फिर येह दुआ़ मांगी : या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं ने जो कुछ कुरआन पढ़ा उस का सवाब इस क़ब्रिस्तान के मोमिन मर्दों और मोमिन औ़रतों को पहुंचा । तो वोह तमाम मोमिन क़ियामत के रोज़ इस (या'नी ईसाले सवाब करने वाले) के सिफ़ारिशी होंगे । (شَرحُ الصُّدُور ص ۳۱۱ مرکز اہلسنت برکات رضا الہند)

ह़दीसे पाक में है : "जो ग्यारह बार सूरतुल इख़्लास या'नी قُلْ ھُوَاللّٰہُ اَحَد (मुकम्मल सूरह) पढ़ कर इस का सवाब मुर्दों को पहुंचाए, तो मुर्दों की गिनती के बराबर इसे (या'नी ईसाले सवाब करने वाले को) सवाब मिलेगा ।"

(دُرِّمُختار ج ۳ ص ۱۸۳)

﴾10﴿ क़ब्र के ऊपर अगरबत्ती न जलाई जाए कि इस में सूए अदब (या'नी बे अदबी) और बद फ़ाली है (और इस से मय्यित को तक्लीफ़ होती है) हां अगर (ह़ाज़िरीन को) ख़ुश्बू (पहुंचाने) के लिये (लगाना चाहें तो) क़ब्र के पास ख़ाली जगह हो वहां लगाएं कि ख़ुश्बू पहुंचाना मह़बूब (या'नी पसन्दीदा) है ।

(मुलख़्ख़सन फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 9, स. 482,525)

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه एक और जगह फ़रमाते हैं : ''सह़ीह़ मुस्लिम शरीफ़ में ह़ज़रते अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि उन्हों ने दमे मर्ग (या'नी ब वक़्ते वफ़ात) अपने फ़रज़न्द से फ़रमाया : ''जब मैं मर जाऊं तो मेरे साथ न कोई नौह़ा करने वाली जाए न आग जाए।''

(صَحِیح مُسلِم ص ۷۵ حدیث ۱۹۲ دار ابن حزم بیروت)

﴾11﴿ क़ब्र पर चराग़ या मोमबत्ती वग़ैरा न रखे कि येह आग है, और क़ब्र पर आग रखने से मय्यित को अज़िय्यत (या'नी तक्लीफ़) होती है, हां रात में राह चलने वालों के लिये रोशनी मक़्सूद हो, तो क़ब्र के एक जानिब ख़ाली ज़मीन पर मोमबत्ती या चराग़ रख सकते हैं।

हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ दो कुतुब (1) 312 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 16 और (2) 120 सफ़ह़ात की किताब 'सुन्नतें और आदाब' हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तर्बिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

📖 बयान करने के मुतअ़ल्लिक़ मा'लूमात 📖

(1) बयान करने से पहले कम अज़ कम एक बार लाज़िमन पढ़ लें

(2) जो कुछ लिखा है वोही सुनाएं, अपनी त़रफ़ से कमी-बेशी न करें

(3) हेडिंग, ह़वालाजात, आयात, और अ़रबी इबारात हरगिज़ न पढ़ा करें

(4) बयान के बारे में मुफ़ीद मश्वरें मजलिसे तराजिम को इरसाल करें

-: राबित़ा :-

MAJLISE TARAJIM, BARODA (DAWATE ISLAMI)

translation.baroda@dawateislami.net (+ 91 9327776311)

www.dawateislami.net

दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पढ़े जाने वाले 7 दुरूदे पाक

﴾1﴿ शबे जुमुआ़ का दुरूद :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الْحَبِيْبِ الْعَالِى الْقَدْرِ الْعَظِيْمِ الْجَاهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلِّمْ

बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि जो शख़्स हर शबे जुमुआ़ (जुमुआ़ और जुमा'रात की दरमियानी रात) इस दुरूद शरीफ़ को पाबन्दी से कम अज़ कम एक मरतबा पढ़ेगा मौत के वक़्त सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत करेगा और क़ब्र में दाख़िल होते वक़्त भी, यहां तक कि वोह देखेगा कि सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उसे क़ब्र में अपने रह़मत भरे हाथों से उतार रहे हैं। (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰى سَيِّدِ السَّادات ص ۱۵۱ ملخصًا)

﴾2﴿ तमाम गुनाह मुआ़फ़ :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَسَلِّمْ

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स येह दुरूदे पाक पढ़े अगर खड़ा था तो बैठने से पहले और बैठा था तो खड़े होने से पहले उस के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे। (اَیضاً ص ۶۵)

﴾3﴿ रह़मत के सत्तर दरवाज़े : صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ

जो येह दुरूदे पाक पढ़ता है तो उस पर रह़मत के **70** दरवाज़े खोल दिये जाते हैं। (اَلْقَوْلُ الْبَدِيْع ص ۲۷۷)

www.dawateislami.net

﴾4﴿ एक हज़ार दिन की नेकियां :

جَزَى اللّٰهُ عَنَّا مُحَمَّدًا مَا هُوَ اَهْلُهٗ

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इस दुरूदे पाक को पढ़ने वाले के लिये सत्तर फ़िरिश्ते एक हज़ार दिन तक नेकियां लिखते हैं। (مجمع الزوائد)

﴾5﴿ छे लाख दुरूद शरीफ़ का सवाब :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَدَدَ مَا فِيْ عِلْمِ اللّٰهِ صَلَاةً دَآئِمَةً بِدَوَامِ مُلْكِ اللّٰهِ

ह़ज़रते अह़मद सावी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی बा'ज़ बुज़ुर्गों से नक़्ल करते हैं : इस दुरूद शरीफ़ को एक बार पढ़ने से छे लाख दुरूद शरीफ़ पढ़ने का सवाब ह़ासिल होता है। (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰی سَیِّدِ السَّادات)

﴾6﴿ कुर्बे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:**

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كَمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰى لَهٗ

एक दिन एक शख़्स आया तो हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे अपने और सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दरमियान बिठा लिया। इस से सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن को तअ़ज्जुब हुवा कि येह कौन ज़ी मर्तबा है ! जब वोह चला गया तो सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, येह जब मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है तो यूं पढ़ता है। (اَلْقَوْلُ الْبَدِیْع ص ۱۲۵)

﴾7﴿ दुरूदे शफ़ाअ़त :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاَنْزِلْهُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

शाफ़ेए़ उमम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है जो शख़्स यूं दुरूदे पाक पढ़े उस के लिये मेरी शफ़ाअ़त वाजिब हो जाती है।

(الترغیب والترہیب ج ۲ ص ۳۲۹، حدیث ۳۱)

www.dawateislami.net